SEMESTER-IV

Paper OC 15 A: Pre Service and In Service teacher education.

UNIT- II

Topic - Transactional approaches for the foundation courses.
- Expository, Participatory, collaborative, Peer-coaching and Inquiry, scope and Possibilities for organisation and evaluation.

UNIT-II, Topic-2.

प्रस्तुत प्रकरण (Topic) में विनिमय उपागम (लेन-देन विधि) अंग्रेजी में Transactional approaches की बात, आपके फाउण्डेसन कोर्सं/विषयों के सन्दर्भ में की गई है। आप सभी अपने पाठ्यक्रम के आधारभूत/फाउण्डेसन विषयों से परिचित हैं। अतः हम अब ट्रांजेक्सनल एप्रोचों के बारे में चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम Transactional approaches के बारे में चर्चा करते हैं- यहाँ Transaction का अर्थ लेन देन से है। जैसे बैंक व ग्राहक के बीच किस का Transaction होता है? .... पैसे का

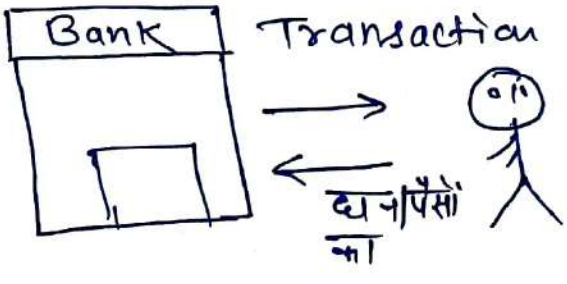

ठीक उसी प्रकार शिक्षक व छात्र के बीच किस चीज का ट्रांजेक्सन होता है?...... ज्ञान अथवा विषयवस्तु का। अतः ट्रांजेक्सनल उपागम/एप्रोच, शिक्षक व छात्र के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान की विधियाँ हैं, ये विधियाँ ज्ञान के शिक्षक द्वारा एकतरफा सम्प्रेषण है

Scanned with CamScanner

विरुद्ध, शिक्षक व छात्र की अन्तःक्रिया द्वारा ज्ञान के विनिमय पर बल देती है। अर्थात शिक्षक को ज्ञान बच्चे के मस्तिष्क में एकतरफा सम्प्रेषण मात्र से नहीं भरना वरन् छात्र स्वयं सक्रिय भागीदारी से शिक्षक के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए ज्ञान का अपने मस्तिष्क में निर्माण करें। आपके इस प्रकरण में जिन ट्रांजिक्सन एप्रोन्चों को शामिल किया गया है वह निम्न हैं -

(1) Expository Approache (वर्णनात्मक उपागम)

(2) Participatory Approache (सहभागिता उपागम)

(3) collaborative Approache (सहयोगी उपागम)

(4) Peer coaching and, (समकक्षी अनुशिक्षण/प्रशिक्षण)

(5) Inquiry Approache (पृच्छा/परिपृच्छा/पूछताछ उपागम)

(1) Expository Approache (वर्णनात्मक उपागम)

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें शिक्षक किसी वृहद विषय अथवा प्रकरण का वर्णन प्रस्तुत करता है। वैसे तो यह शिक्षक केन्द्रित विधि है, परन्तु इसकी विशेषताओं व विषय सामग्री की विशेष प्रकृति के कारण यह बहुतायत प्रयुक्त की जाती है। इसमें शिक्षक किसी विषयवस्तु पर व्याख्यान (Lecture) देता है, व्याख्यान में यथोचित स्थानों पर वर्णन प्रस्तुत करता है, विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है व उत्तर देने के लिए कहता है। यह विधि व्याख्यान विधि से अधिक उत्तम है, क्योंकि इसमें व्याख्यान विधि के साथ-2 वर्णन भी शामिल है।

Scanned with CamScanner

⇒ वर्णनात्मक उपागम का प्रयोग –

(1) जब प्रकरण व्यापक होता है, तथा अध्यापक के पास समय का अभाव होता है।

(2) जब शिक्षण किये जाने वाले विषय के सम्बन्ध में छात्रों का पूर्व ज्ञान सीमित | अभाव हो।

(3) जब कोई सिद्धान्त | प्रकरण | विचार केवल व्याख्यानों द्वारा ही सिखाया जा सकता है।

⇒ चरण – (Steps)/प्रक्रिया/ (1) छात्रों के पूर्व ज्ञान का पता लगाना

(2) छात्रों को स्पष्ट कर देना की किस विषय का शिक्षण किया जाना है।

(3) सहायक सामग्री का उचित प्रयोग करना।

(4) इसके अन्तर्गत निम्न युक्तियों (Devices) का प्रयोग किया जाना चाहिए –

(1) कहानी (2) उदाहरण (3) प्रतिमान (Models) (4) रेखाचित्र (5) प्रदर्शन (यदि सम्भव हो सके)

→ वर्णनात्मक उपागम को प्रभावी बनाने हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ :

(1) सत्रकार्य (Assignments)
(2) गृह कार्य (Home Work)
(3) विषयवस्तु को याद रखना (स्मरण)
(4) ग्रहण करना (Reciving)
(5) प्रश्न पूछना
(6) चर्चा

⇒: वर्णनात्मक उपागम के प्रयोग हेतु कुछ प्रकरण (उदाहरण के लिए)

⇒ सौरमण्डल, विभिन्न प्रकार के मानचित्र व उनके प्रयोग, हिन्दी व अंग्रेजी के गद्य, पद्य, तथा महान व्यक्तित्वों का वर्णन, इतिहास आदि के प्रकरण।

Scanned with CamScanner